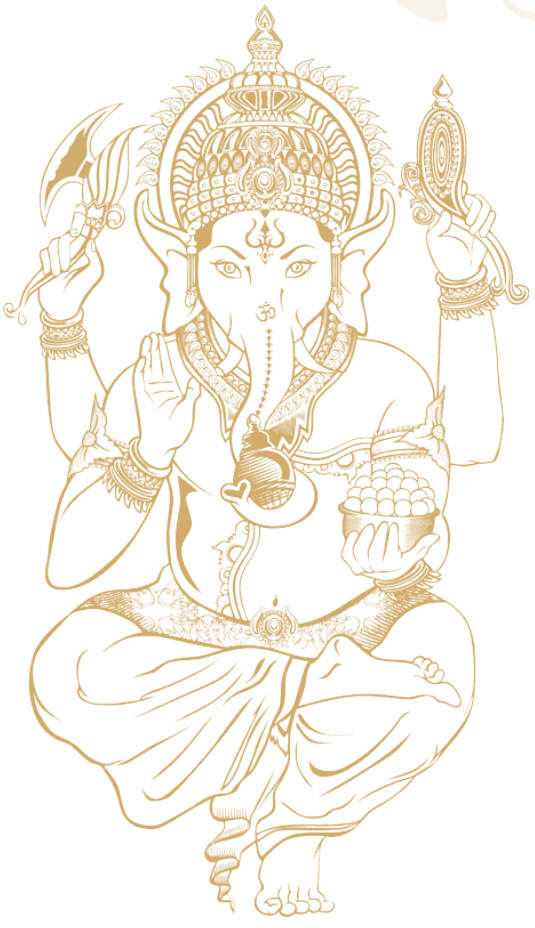

Mr.Dr Aditya

Ms. Dr Rajshree Shukla

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119281311

पुल्लिंग :	लिंग	: स्त्रीलिंग
25/10/1996 :	जन्म तिथि	: 04/08/1999
शुक्रवार :	दिन	: बुधवार
घंटे 07:05:00 :	जन्म समय	: 23:25:00 घंटे
घटी 02:34:43 :	जन्म समय(घटी)	: 44:28:24 घटी
India :	देश	: India
Raipur :	स्थान	: Rajnandgaon
21:16:00 उत्तर :	अक्षांश	: 21:05:00 उत्तर
81:42:00 पूर्व :	रेखांश	: 81:05:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व :	मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व
घंटे -00:03:12 :	स्थानिक संस्कार	: -00:05:40 घंटे
घंटे 00:00:00 :	ग्रीष्म संस्कार	: 00:00:00 घंटे
06:03:06 :	सूर्योदय	: 05:40:22
17:31:20 :	सूर्यास्त	: 18:42:49
23:48:46 :	चित्रपक्षीय अयनांश	: 23:50:53

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
बुध 14वर्ष 9मा 11दि		21:16:00	तुला	लग्न	मेष	17:15:43	शुक्र 12वर्ष 6मा 4दि	
शुक्र		08:06:27	तुला	सूर्य	कर्क	18:03:56	चन्द्र	
06/08/2018		18:24:26	मीन	चंद्र	मेष	18:19:33	07/02/2018	
06/08/2038		03:15:18	सिंह	मंगल	तुला	19:25:06	07/02/2028	
शुक्र	06/12/2021	02:51:38	तुला	बुध व	कर्क	04:50:21	चन्द्र	08/12/2018
सूर्य	06/12/2022	17:56:44	धनु	गुरु	मेष	10:27:48	मंगल	09/07/2019
चन्द्र	06/08/2024	00:51:18	कन्या	शुक्र व	सिंह	10:38:59	राहु	07/01/2021
मंगल	06/10/2025	08:06:11	मीन व	शनि	मेष	22:46:21	गुरु	09/05/2022
राहु	06/10/2028	12:50:25	कन्या व	राहु व	कर्क	19:07:24	शनि	08/12/2023
गुरु	07/06/2031	12:50:25	मीन व	केतु व	मक	19:07:24	बुध	09/05/2025
शनि	06/08/2034	06:55:33	मक	हर्ष व	मक	21:05:20	केतु	08/12/2025
बुध	06/06/2037	01:15:32	मक	नेप व	मक	08:52:32	शुक्र	09/08/2027
केतु	06/08/2038	08:00:02	वृश्चि	प्लूटो व	वृश्चि	13:56:43	सूर्य	07/02/2028

लग्न-चलित

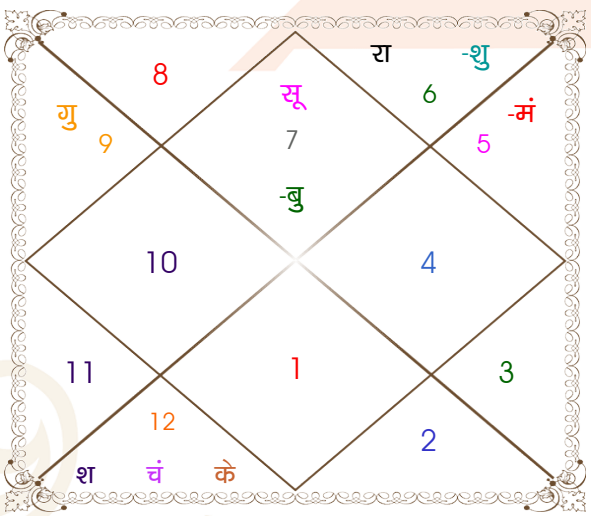

लग्न-चलित

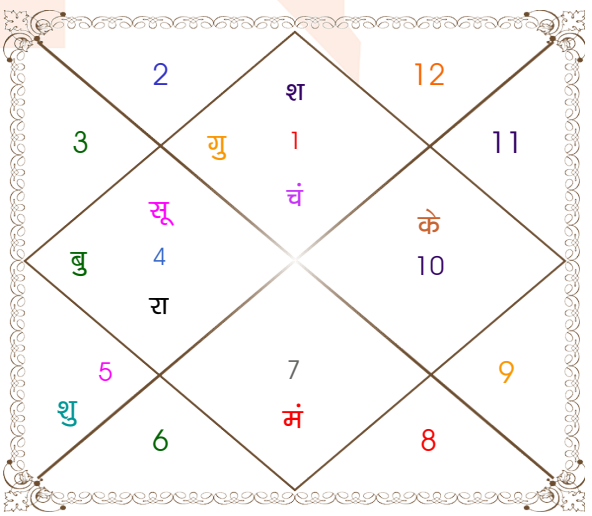

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	चतुष्पाद	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	मित्र	विपत	3	1.50	--	भाग्य
योनि	गज	गज	4	4.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	मंगल	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मीन	मेष	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	26.50		

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

डतण्क्त ।कपजलं का वर्ग सर्प है तथा डेण् क्त त्रींतममौनासं का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गो में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण्क्त ।कपजलं और डेण् क्त त्रींतममौनासं का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

डतण्क्त ।कपजलं मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है।

डेण् क्त त्रींतममौनासं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

सप्तमो यदा भौमः गुरूणां च निरीक्षिता।
तदास्तु सर्वसौख्यं च मंगली दोषनाशकृत्।।

सप्तम मंगल को गुरु देखता हो मंगली दोष कट जाता है।

क्योंकि डेण् क्त त्रींतममौनासं कि कुण्डली में सप्तम मंगल को गुरु देखता है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि डतण्क्त ।कपजलं कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतण्क्त ।कपजलं तथा डेण् क्त त्ॅीतममॅ ।नासं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।